Ques → लोक प्रशासन की परिभाषा दें तथा विकासशील या लोक कल्याणकारी राज्यों में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालें।

Ans → राज्य मनुष्य की सर्वोत्तम संस्था है। राज्य के अलग या बाहर मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। राज्य के स्वरूप में समय और परिस्थिति के साथ परिवर्तन भी आता रहा है। 19 वीं शताब्दी का राज्य पुलिस राज्य के नाम से जाना जाता था, क्योंकि उसके मौलिक कार्य केवल दो ही थे।– देश की सीमाओं की रक्षा करना तथा आंतरिक शांति एवं व्यवस्था बनाये रखना। 20 वीं शताब्दी के आगमन के साथ-२ राज्य के स्वरूप में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। आज लोक कल्याणकारी राज्य का युग है। लोक कल्याण कारी राज्य उस राज्य को कहा जाता है जो कि मानव जीवन के प्रत्येक पहलू से संबंधित हो तथा उसके विकास के लिये प्रयत्न करता हो। अपने बदले हुये परिवेश के कारण राज्य के कार्यक्षेत्र में निरंतर विस्तार होता जा रहा है। जीवन का शायद ही ऐसा कोई पहलू हो, जो कि राज्य के कार्यक्षेत्र से अलग हो। इस बढ़े हुये दायित्व का सफल निर्वाह लोक प्रशासन की कार्य दक्षता, कर्तव्य-निष्ठा तथा इमानदारी पर आश्रित रहता है। वर्तमान राज्य की सफलता एवं असफलता का दायित्व लोक प्रशासन पर ही निर्भर है। संक्षेप में लोक प्रशासन वह संगठन है जो कि राज्य की इच्छाओं को मूर्त रूप प्रदान करता है।

इसके पूर्व कि हम लोक प्रशासन की व्याख्या प्रस्तुत करें, प्रशासन शब्द का अर्थ स्पष्ट कर लेना उचित होगा।

प्राचीन भारतीय ग्रंथो में भी इस शब्द की व्युत्पत्ति देखी जा सकती है। यह शब्द संस्कृत भाषा के दो धातुओं (प्र और शास) के योग से बना है जिसका संयुक्त अर्थ परिष्कृत या उत्कृष्ट शासन व्यवस्था होता है। वैदिक युग में यज्ञों में मुख्य पुरोहित को प्रशास्ता के नाम से संबोधित किया जाता था जिसका मुख्य दायित्व यज्ञ संचालन हेतु निर्देश देना, पथ प्रदर्शन करना, आदेश या आज्ञा देना होता था। बाद में शासन काल में निर्देश देने वाले राजा या संचालक को प्रशास्ता के नाम से संबोधित किया जाने लगा।

ऐसे शब्द व्युत्पत्ति की दृष्टि से प्रशासन अंग्रेजी भाषा के Administration शब्द का हिन्दी रूपान्तर है और यह शब्द अन्य दो शब्दों (Ad + minister) के योग से बना है जिसका संयुक्त अर्थ एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति के हित को ध्यान में रखकर सेवा करना या कार्य करना होता है।

आक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार कार्यों का प्रबंध या लोगों की देखभाल करना ही प्रशासन है। पुनः Encyclopedia

Britannica के अनुसार कार्यों का प्रबंध या उनको पूर्ण करने की प्रक्रिया ही प्रशासन है।

Simon के शब्दो में "अपने व्यापक रूप में प्रशासन की व्याख्या उन समस्त सामूहिक क्रियाओ से की जा सकती है जो सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिये सहयोगात्मक रूप में प्रस्तुत की जाती है।"

पिफनर के शब्दो में → मनुष्य एवं भौतिक साधनो का संगठन एवं नियंत्रण ही प्रशासन है।

L.D. White के विचारानुसार → प्रशासन किसी विशिष्ट उद्देश्य अथवा लक्ष्य की प्राप्ति के लिये बहुत से व्यक्तियों के संबंध में निर्देश, नियंत्रण तथा समन्वीकरण की कला है।

Z.A. Wing (विग) के अनुसार → प्रशासन एक चेतनापूर्ण ध्येय की सिद्धी के लिये किया जाने वाला नियोजित कार्य है।

ऊपर्युक्त परिभाषाओ से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रशासन मनुष्यो की उस सामुहिक क्रिया का नाम है जिसका उद्देश्य एक निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करना होता है।

प्रशासन शब्द का अर्थ समझ लेने के बाद लोक प्रशासन की व्याख्या करते हुये हम यह कह सकते हैं कि -चुंकि सरकार की क्रियायें सार्वजनिक अथवा लोकहित के लिये संपन्न की जाती हैं अत: सरकारी कार्यो के प्रशासन को लोक प्रशासन कहा जाता है। दूसरे शब्दो में प्रशासन का वह प्रकार जो जनहित की भावना से प्रेरित होकर सार्वजनिक हित प्राप्ति के लिये प्रयत्न करता है, लोक प्रशासन कहा जाता है। संक्षेप में लोक प्रशासन सरकार द्वारा सार्वजनिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिये किया जाने वाला संगठित प्रयास है।

लोक कल्याणकारी राज्य और लोक प्रशासन → आधुनिक राज्य की विशेषताओं में एक ऐसा तत्व है जो विश्व के अधिकांश देशो में पाया जाता है। लोक कल्याणकारी राज्य उस राज्य को कहते हैं जहाँ सरकार का उद्देश्य आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा तथा न्याय व्यवस्था के अंतर्गत जन कल्याण के लिये कार्य करना है। प्रो० केन्ट के अनुसार → "एक कल्याणकारी राज्य से अभिप्राय उस राज्य से है जो नागरिको के लिये विस्तृत सेवाये प्रदान करता है।" नेहरू के अनुसार → सबके लिये समान अवसर प्रदान करना, अमीरी गरीबी के बीच अंतर मिटाना तथा रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाना, लोक कल्याण कारी राज्य के आधारभूत तत्व हैं।"

इस प्रकार लोक कल्याणकारी राज्य पुलिस राज्य से भिन्न होता है। यद्यपि पुलिस राज्य भी कुछ लोक कल्याणकारी कार्यो का संपादन करती है। परन्तु उनकी मात्रा कम होती है और

Scanned with CamScanner

ऐसे कार्यों का संपादन शासन की इच्छा पर निर्भर करता है। इसके विपरित लोक कल्याणकारी पर कल्याणकारी राज्य का मुख्य उद्देश्य होता है। इसकी मात्रा भी अधिक होती है। तथा जनता शासक वर्ग से ऐसे कार्यो की संपादन की अपेक्षा भी करती है।

वर्तमान लोक कल्याणकारी राज्य का यह प्रयास कि समाज में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा अन्य क्षेत्रो में नागरिको को नियंत्रित करते हुये समानता स्वतन्त्रता तथा न्याय की स्थापना की जाये। परन्तु लोक कल्याण कारी स्वरूप के कारण राज्य का कार्यक्षेत्र दिन प्रतिदिन व्यापक होता जा रहा है। इस बढ़े हुये दायित्व का निर्वाह लोक प्रशासन के माध्यम से ही संभव है। अतः ऐसे राज्य की सफलता का रहस्य लोक प्रशासन की कार्य कुशलता में निहीत है। लोक प्रशासन के माध्यम से ही राज्य विविध हितो की पूर्ति करने में सफल हो सकता है। आर्थिक जीवन के लक्ष्य प्रशासन की कार्यकुशलता के माध्यम से ही प्राप्त किये जा सकते है। इस प्रकार लोक कल्याणकारी राज्य के कार्य क्षेत्र में वृद्धि के साथ लोक प्रशासन का स्वरूप भी व्यापक होता जा रहा है।

राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत भारत में लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना का लक्ष्य इंगित करते है। पंचवर्षीय योजनाओ को कार्यरूप देते हुये भारतीय प्रशासन लोक कल्याणकारी राज्य के रूप में देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सामुदायिक विकास योजनाओ के माध्यम से प्रशासन गांवो के विकास का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। इतना ही नही आज का भारतीय प्रशासन कुछ दोषो से ग्रस्त होते हुये भी सामाजिक न्याय के सिद्धांत पर आधारित एक लोक कल्याणकारी समाजवादी राज्य के स्थापना के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार के जन कल्याणकारी तथा जनोपयोगी सेवा कार्यो से जुड़ा हुआ है तथा उनके संपादन में संलग्न है।

संक्षेप में लोक कल्याणकारी राज्य की सभ्यता प्रशासकीय कुशलता पर अवलंबित है। सार्वजनिक लक्ष्यो की पूर्ति केवल योग्य एवं प्रभावशाली प्रशासन पर आधारित है। लोक प्रशासन व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सहायता पहुँचा रहा है। वह उसे सामाजिक सुरक्षा प्रदान करता है। देश में बेरोजगारी का निवारण करना, आर्थिक विषमता को दूर करना, पूँजीपतियो द्वारा मजदूरो के शासन को समाप्त करना आदी कार्य लोक प्रशासन द्वारा किये जाते है। कल्याणकारी राज्य में लोक प्रशासन के महत्व को स्वीकार करते हुये कहा जा सकता है कि एक कल्याणकारी राज्य जहाँ पर नियोजित अर्थ व्यवस्था होती है तथा गणतंत्रात्मक संविधान रहता है, वह तब तक कार्य नही कर सकता जब तक कि एकीकृत ढ़ाँचे वाला लोक प्रशासन नही हो।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

विकासशील राज्य तथा लोक प्रशासन → लोक प्रशासन का दायित्व उन देशों में और भी बढ़ जाता है जहाँ कि आर्थिक, समाजिक और शैक्षणिक स्तर गिरा हुआ है तथा पिछड़ा हुआ है। विकासशील देशों में प्रशासन का कार्य केवल नाकारात्मक ही नहीं बल्कि सृजनात्मक भी है। यदि प्रशासन नागरिकों के लिये अनुकूल वातावरण बनाने में असफल रहता है तो इन देशों में जन जीवन असुरक्षित हो जाता है। विकसित देशों में लोक प्रशासन की आधुनिक तकनीकों का प्रयोग अधिक से अधिक किया जा रहा है तथा प्रशासनिक कला के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई है। फिर भी एशिया अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका के नवोदित राष्ट्र अभी भी अनेकों प्रशासनिक समस्याओं से ग्रस्त हैं।

विकासशील राज्यों की प्रमुख समस्यायें →

(A) विकासशील राज्यों में समुचित प्रशासनिक संरचना का विकास नहीं हो पाया है। शासकीय कार्यों की वृद्धि तथा बढ़ती हुई जन ईच्छाओं एवं आकांक्षाओं के अनुपात में प्रशासनिक संगठनों एवं संस्थाओं का निर्माण नहीं हो पा रहा है।

(B) विकासशील देशों में योग्यता तथा गुणों के आधार पर कार्मिक प्रशासन का निर्माण नहीं हो पाया है।

(C) विकासशील देशों में पश्चिमी जगत के प्रशासकीय संगठन प्रणाली को अपनाया गया है, किन्तु वहाँ व्यवसायिक मानकों का आभाव है। फलस्वरूप प्रशासन सही ढंग से सही दिशा में संचालित नहीं हो पा रहा है।

(D) अधिकांश विकासशील देशों में प्रशासकीय नेतृत्व का विकास नहीं हो पाया है। प्रशासन भ्रष्टाचार, वैज्ञानिक तोड़ जोड़, नौकरशाही तथा लाल फीताशाही में लिप्त होता जा रहा है। इन देशों के प्रशासनों में न तो आत्म विश्वास है और न ही जनकल्याण की प्राप्ति निष्ठा।

(E) प्रशासन में नैतिकता का आभाव है फलस्वरूप प्रशासक जन हित की जगह व्यक्तिगत हित में अपनी शक्ति का प्रयोग करते हैं।

(F) इन राज्यों में संगठित एवं जागरूक लोकमत का आभाव है। फलतः नौकरशाही की प्रवृति निरंतर बलवती होती जा रही है।

(G) विकासशील देशों में कुशल एवं विशेषज्ञ प्रशासकों का भी आभाव दिखाई पड़ता है।

इन दोषों के बावजूद विकासशील राज्यों में लोक प्रशासन की भूमिका महत्वपूर्ण है। लोक प्रशासन के माध्यम से ही योजनाओं का निर्माण तथा उनका उचित कार्यान्वयन संभव है। सामाजिक तथा आर्थिक विकास से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों को लोक प्रशासन के माध्यम से ही क्रियान्वित किया जा सकता है, परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि इन देशों में राजनीतिक स्थिरता उत्पन्न की जाय। प्रजातंत्र में आस्था जाग्रत की जाय, ठोस प्रशासकीय ढाँचे का निर्माण किया जाय, प्रतिबद्ध एवं कुशल कार्मिक व्यवस्था की जाय तथा प्रशासक को जनता के प्रति उत्तरदायी बनाया जाय।

Scanned with CamScanner

CONCLUSION → इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि लोक प्रशासन का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। भले ही राज्य का स्वरूप प्रजातांत्रिक हो या लोक कल्याणकारी अथवा राज्य विकसित हो या विकासशील। प्रशासक का क्षेत्र राज्य के स्वरूप परिवर्तन के साथ अत्यधिक व्यापक हो गया है तथा इसके दायित्वों में काफी वृद्धि हुई है। आज का लोक प्रशासन राज्य के सभी प्रकार के दायित्वो का निर्वहन करते हुये निर्दिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिये निरंतर क्रियाशील रहता है।

—x—

Dr. S. B. Kumar
Dept. of Pol. Sc.

Scanned with CamScanner